PAPER-III, UNIT-I (भाग-II)

INDIA : CLIMATE

(A) (2) शुष्क ग्रीष्म ऋतु (Dry summer season)

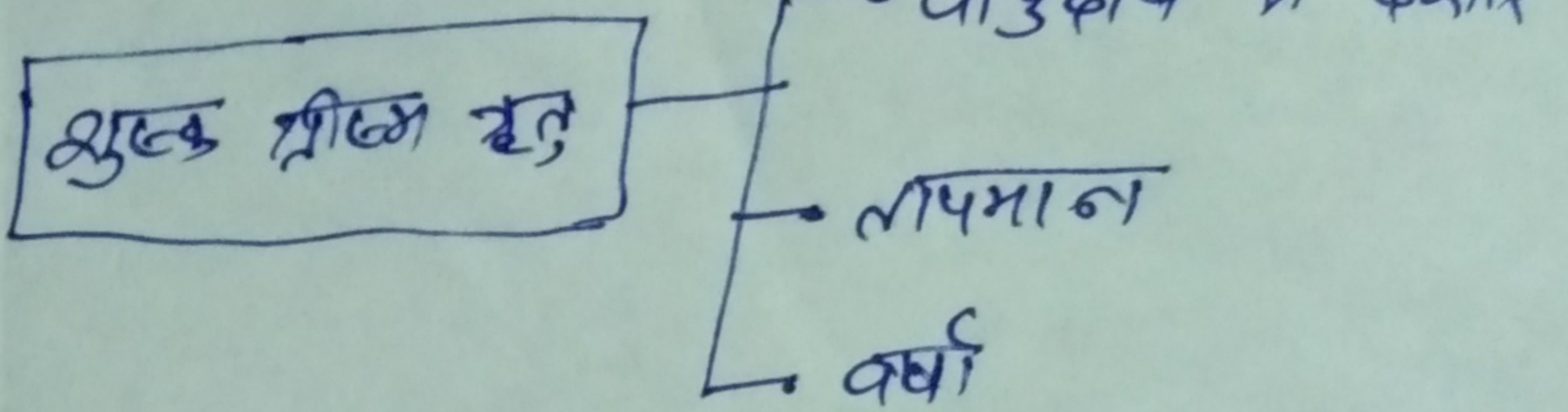

शुष्क ग्रीष्म ऋतु
- वायुदाब की दशाएँ
- तापमान
- वर्षा

(i) वायुदाब की दशाएँ :- मार्च माह में सूर्य विषुवत रेखा पर होता है। एवं इसके पश्चात मार्च के अंत तक वह कर्क रेखा की ओर आना आरंभ कर देता है। इस कारण सारे देश में तापमान बढ़ने लगते हैं और वायुदाब में कमी होने लगती है। ठीक इसी समय दक्षिणी हिन्द महासागर, दक्षिणी अफ्रीका एवं आस्ट्रेलिया में तापमान गिरते हैं तथा इन क्षेत्रों में प्रतिचक्रवातों का चलना आरंभ हो जाता है। ज्यों ज्यों सूर्य कर्क रेखा की ओर बढ़ता जाता है। त्यों त्यों निम्न वायुदाब उत्तर पश्चिम भारत की ओर बढ़ने लगता है। मार्च में सर्वाधिक तापमान दक्षिणी भारत में 40°C पाया जाता है। जबकि अप्रैल में मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान में उच्चतम तापमान मई में 45°C तक पहुँच जाता है। मई माह में बीकानेर का उच्चतम तापमान 48°C

तक होता है।

① तापमान :- इस समय तटीय प्रदेशों में स्थलीय एवं जलीय पवनें चलती हैं। अतः कम तापांतर पाया जाता है। जबकि आंतरिक प्रदेशों के स्थानीय पवनों के कारण तापमान अधिक पाया जाता है। इसके परिणामस्वरूप तटीय प्रदेशों के तापमानों एवं आंतरिक प्रदेशों के तापमानों में बहुत ही अंतर हो जाता है। दैनिक तापांतर भी आंतरिक भागों में 15°C से 20°C तक अर्थात् फैले रहते हैं। कभी-कभी इससे भी अधिक पड़ने जाता है। किन्तु तटीय प्रदेशों में दैनिक तापांतर 5°C ही रहता है। ज्यों ज्यों गर्मी बढ़ती जाती है। त्यों त्यों निम्न वायु-दाब के क्षेत्र उत्तरी भारत की ओर बढ़ते हैं। अप्रैल के अंत में ही उत्तरी व उत्तर-पश्चिमी भारत में बड़ी तेजी से तापमान बढ़ने लगते हैं। वैसे तो छोटे देश में ही तापमान बढ़ते हैं। पर उत्तर में विशेष तौर पर तेजी से बढ़ते हैं।

② वर्षा :- मार्च से मई तक ग्रीष्म ऋतु में सारे भारत में वर्षा या तो होती ही नहीं है। यदि होती भी है तो कुछ ही भागों में और वह भी बहुत कम मात्रा में (सम्पूर्ण वर्षा का केवल 10%) मार्च में उत्तरी भारत में पश्चिम से चक्रवात आते हैं। इससे इन प्रदेशों में कभी कभी थोड़ी बहुत वर्षा हो जाती है। दक्षिण-मानसूनी पवनें चलते

है।

(B) वर्षा ऋतु या दक्षिण-पश्चिमी मानसून का समय (Rainy season or the S.W. monsoon)

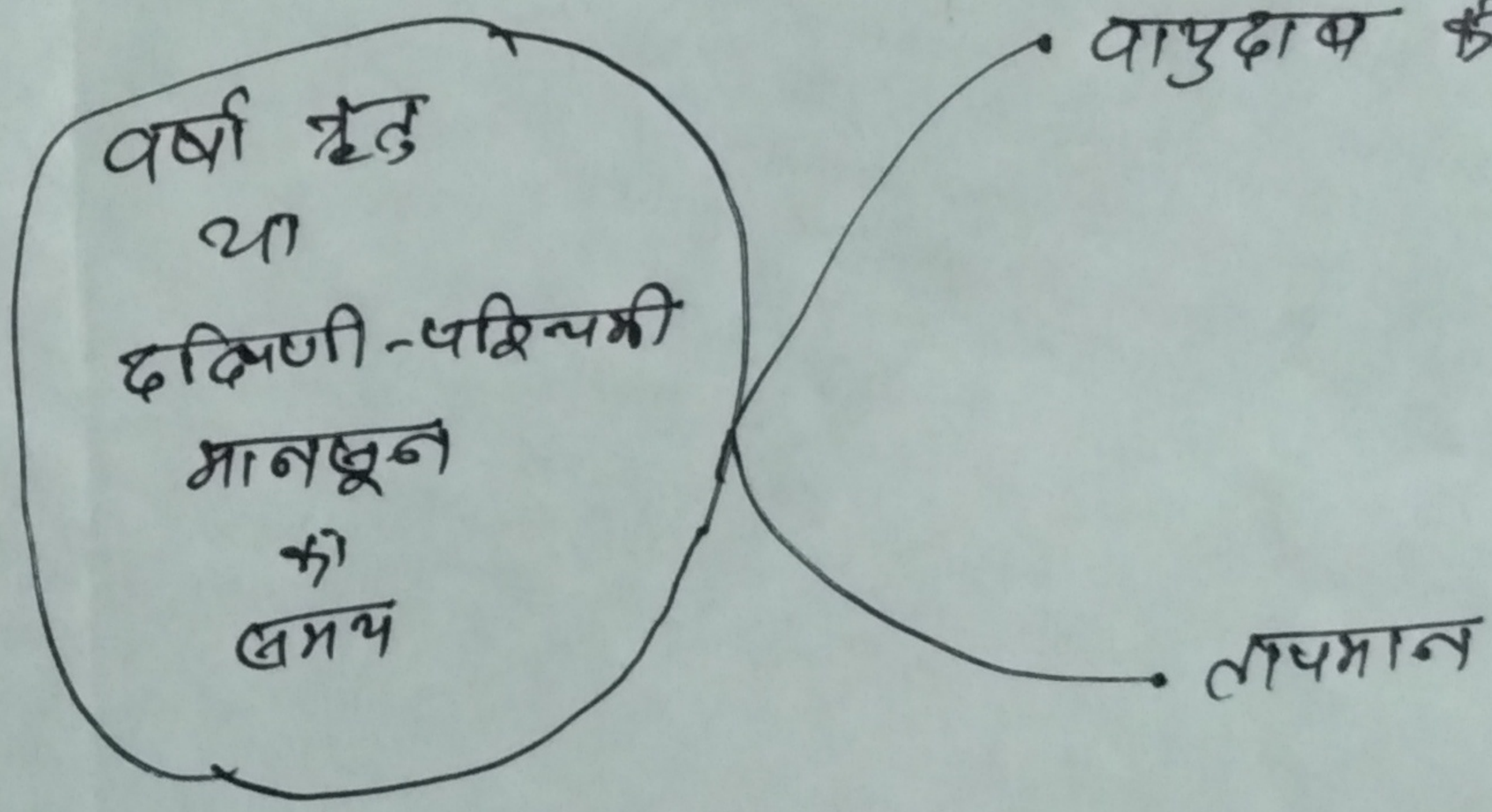

वायुदाब की दशाएँ :- इस मानसून का समय सामान्यतः 5 जून से लगातार 25 सितम्बर तक माना गया है। इस समय जब सूर्य कर्क रेखा पर चमकता है। तो वायुमंडल की अवस्थाओं में बड़ा परिवर्तन हो जाता है। विषुवत्‌रेखीय निम्न वायु दाब की तुलना में थार के मरुस्थल का निम्न वायुदाब और भी सघन हो जाता है। यहाँ पर 992 से 996 मिलीबार तक वायुदाब गिर जाता है। इसके फलस्वरूप दक्षिणी गोलार्द्ध की (दक्षिणी हिन्द महासागर से आने वाली) दक्षिणी पूर्व सन्मार्गी पवनें इस निम्न वायुदाब के केन्द्र तक आने

का प्रभाव करती है। ज्योंही ये पवनें विषुवत् रेखा को पार करती है, फेरल के नियमानुसार अपनी दिशा बदल देती है, और दक्षिणी-पश्चिमी मानसून के नाम से भारत की ओर बढ़ने लगती है। जिस प्रकार एक निम्न वायुदाब का क्षेत्र थार के मरुस्थल में बन जाता है। उसी प्रकार एक दूसरा निम्न वायुदाब क्षेत्र नागपुर पठार के आस-पास भी बन जाता है। चूँकि यह क्षेत्र एक स्थान पर स्थिर नहीं रहते। अतः वर्षा भी सभी क्षेत्रों के समान नहीं होती।

(i) तापमान :- ज्यों-ज्यों मानसूनी वर्षा सारे देश मे फैलने लगती है त्यों-त्यों तापमान भी स्थिर होकर कम होने लगता है। जून एवं जुलाई मे पश्चिमी मरुस्थल और देश के कुछ भागों को छोड़कर सारे देश के तापमान मे समानता रहती है। किन्तु यदि लम्बे समय तक वर्षा नहीं होती है। तो बीच-बीच मे तापमान बढ़ जाते है। उत्तरी पश्चिमी राजस्थान ही एकमात्र ऐसा भाग है। यहाँ तापमान लम्बे समय तक काफी ऊँचे रहते है।

—— :0: ——

Dr. Mukul Kumar